

SMITHSONIAN ARCHIVES

9162 I

SMITHSONIAN ARCHIVES

7.8.62

कूनी

नवश

नवल

नवश

यविष्ठि

नवश

लीम

नवश

अरुन

नवश

सरुदव

नवश

कूनी

नवश

वदूक

२

नवश

यागिनी

३

नवश

गल

४

१६ नमः ॥ गाल ॥ मय ॥ अथ श्रीमत्समनयूजावि
धिसिखग ॥ सासखिनवाथल ॥ यगवासनवा
यलकवायकवागय ॥ ॥ स्नान ॥ दुकारवा
यवीकनदयत्रिवनृषवकयालिगदुद्धकाल
वक्षकयकनदयत्रियनसंवद्रितीजसह

सां नृविन्दूलयानसिगकमलववकीन
धायवन्नदृष्टाकटुनिखंददुनिकूल
मलंभनृष्टाहियाय ॥ ॥ वन्दन ॥ श्रीखलु
वन्दनंदिष्टगन्धसुसनादुनं ॥ आरुषि
नललाटाकं वन्दनंयनिगृष्टगं ॥ ॥ सिन्दू

न॥ वी न ष्व वी म हा वी न वी न रु स्म त्रि रु वि गी
नं ला क्का क र्ष णी द वी सि न्द्र ना नू ण म रु मं ॥ ॥
ऊ ऊ म का ॥ य ङ्गा य वी नं य न मं य वि नं यु जा
य नं य ४ स रु ऊं य न सा न। आ यू ख्य म ग्रं य थ मं
व सृ नं य ङ्गा य वी नं व न म सु नं ऊ ॥ ॥ य ॥

ना ना य ॥ य ॥ सु ग न्ध नि सा ल नी क स मा द य ना सो
रु ॥ य सि द्वि दं रु द्र य ॥ य ना नू ण म रु मं ॥ ॥
वि ना च म ॥ ऊं आ त न त्वा य खा हा ॥ ऊं वि द्या
न त्वा य खा हा ॥ ऊं वि व न त्वा य खा हा ॥ ॥
सू यो यो ॥ ॐ अ यथा दि ॥ वा क्का ॥ व धू नं ऊ म

इत्य गस्थाय त्रिजि वन्य स ग। आदि स आ व सा
ननु सान्निग्य विरु चितं ॥ वेर्म स आ दी यि नं क
त्वा गायत्री व न रु चितं । कूट भ क व नं (अष्टः
महा सा रु रु न व ॥ वैज ग्री धी क ल सा रु रु महा
रु न वा य य का ण ग कि स डी हि गा य अ य न म

४ य य न म ४ ॥ ॥ गु न न म स्का त ॥ वैज अ ख रु म
धु ला का नं बा यं य न च न च न । त ल्य दं द न्ति न
अ न त सै धी गु न व न म ४ ॥ गु न व म्मा गु न वि
ष्णु गु न द व स रु ध्व न । गु न द व ऊ ग स र्वं न
सै धी गु न व न म ४ ॥ वैज य न म गु न खान म ४ ॥

नैऋतयत्रमष्टीयुत्रस्थानम॥ नैऋतयत्रमाचार्यः
युत्रस्थानम॥ ॥ नैऋतयत्रमासनाययादूकां ॥ नै
ऋतयत्रमासनाययादूकां ॥ नैऋतयत्रमासनाययादूकां
सनाययादूकां ॥ आत्मनकृत्मासनाययादूकां
कां ॥ पा॥ ध्वंशकृत् न विक्रमः ॥ अंशमशीमाशा

यं नैऋतयत्रमष्टीयुत्रस्थानम॥ नैऋतयत्रमाचार्यः
युत्रस्थानम॥ ॥ नैऋतयत्रमासनाययादूकां ॥ नै
ऋतयत्रमासनाययादूकां ॥ नैऋतयत्रमासनाययादूकां
सनाययादूकां ॥ आत्मनकृत्मासनाययादूकां
कां ॥ पा॥ ध्वंशकृत् न विक्रमः ॥ अंशमशीमाशा

म४॥ ॐ श्रीम श्रीमायां चं चूं ऊं मं ॐ ॐ नऊनीयां
नम४॥ डं श्रीम श्रीमायां टं ० उं रुं लं डं मधमायां
नम४॥ वं श्रीम श्रीमायां नं थं दं धं नं चं अनासिः
कायां नम४॥ अं श्रीम श्रीमायां यं रुं वं रुं सें ॐ क
निष्ठायां नम४॥ ॐ श्रीम श्रीमायां यं नं लं वं धं धं

सं रुं लं दं अ४ कं नं नल पृष्ठायां नम४॥ ॐ श्रीम
श्रीमायां कं खं गं दं दं ॐ दं दं दं दं नम४॥ ॐ
श्रीम श्रीमायां चं चूं ऊं मं ॐ ॐ नित्रसखादा ॥
डं श्रीम श्रीमायां टं ० उं रुं लं डं निखाये वीषद
॥ वं श्रीम श्रीमायां नं थं दं धं नं चं कं वं दं दं ॐ

श्रीमहासाक्षात्पुत्रं वंदे नमः ॥ नमः नमः नमः नमः नमः
 ॥ श्रीमहासाक्षात्पुत्रं वंदे नमः ॥ नमः नमः नमः नमः नमः
 नमः नमः ॥ नमः नमः नमः नमः नमः ॥ नमः नमः नमः नमः नमः
 पूजा ॥ नमः नमः नमः नमः नमः ॥ नमः नमः नमः नमः नमः
 आनन्द ॥ किञ्च नवानन्दे वीनाप्रियतमस्य सत्यं

श्री कलयाण रुद्र त्रिकाशयादूकां ॥ रौं द्र दया
 यज्ञमः ॥ रौं शि त्र म स्वा हा ॥ रौं शि स्वा य वा षट्
 ॥ रौं क व वा य दू ॥ रौं न ग ग या य व षट् ॥ रुं
 अ मु या रुट् ॥ ओं वा रु ना दि ध न म् डो द ध यि
 रू ॥ गं य रौ ने आ त्मा दि सर्व दे वा नि यो रु ली ॥

गिरानाथायविभक्तस्वच्छन्दायधीमहि नन्ना
दययादयान् ॥ ॥ अद्ययागृयुजा ॥ नैअ अद्ययाः
गसनाययादेका ॥ नैअ को को कू यस्मन् २ धात्र २
नन नन २ नृययट २ ययट २ कट २ वस २ दम
२ धात्रय २ विद्यात्रय २ विधि २ दू ३ रुट ३ कोषी

महाकोमात्रिकाविश्वयादका ॥ गूं गूं गूं गूं गूं यं
चनत्तयूक्यामिनम ४ ॥ रौ ददयायनमत्रिया
दि ॥ आवाहनादियानिमूडां दधयन् ॥ ॥ रु
नष्टुदि ॥ नवैत्रयं रुं रुं यं नवैल ॥ ॥ आत्मयूः
जा ॥ नैचन्दननम ४ ॥ कोष्मूकननम ४ ॥ शीमिन्दू

नमः॥ ॐ माहनीनमः॥ ॐ यथैनमः॥ ॥
आवाहन॥ धीमन्तुलासलुलान्ककमयदनिहि
तानन्दशक्तिस्त्रीसासुष्टिन्नायत्रुष्टंजुकूल
कूलगर्गयंत्रकवाच्यसद्वं। तत्त्वात्रयं चको
र्धन्यनत्रयित्रुष्टसुखतामलुलनसंसृ

ष्टंयननसोनमनियुत्रवर्गंरंनवंशीकूऊश
॥ वाक्॥ ॐ दमावादिष्यआवाहयामि॥ ॥
मूलसुगयाअलिक्काय॥ ॐ नैश्रीक्रीरीसाय
साहा॥ ॥ कुरु॥ नवासनायनमः॥ द्वाः
कुरुयासाययादूकांयूऊयामिनमः॥ ३॥ धनं

2162 I

ASMA ARCHIVE



वलि। आवाहनादि दलुसूदां दधयिगु॥ ॥ वदू
कस॥ मयूनासनायनम॥ वां वदूकेनाथयः
पादूकांयूऊयासिनम॥ ३॥ धनं वलि॥ चन्दना
दूगयूष्यंनम॥ नऊनीसूदां दधयिगु॥ ॥ या
गिनीस॥ गवासनायनम॥ यायागिनीस॥ या

दूकांयूऊयासि॥ ३॥ धनं वलि॥ चन्दनादूगयू
ष्यंनम॥ यासिनीसूदां दधयिगु॥ ॥ गलस॥ मूग
सनायनम॥ गं गलयनययादूकांयूऊयासि
नम॥ ३॥ धनं वलि॥ चन्दनादूगयूष्यंनम॥ ग
ऊसूदां दधयिगु॥ ॥ थनाखरुदवतायामाल

काय आङ्गलिच्चाय ॥ ॥ कूनीयूजा ॥ आधम्र ॥
कि कमलासनाय नमः ॥ क्रीं क्रीं कूनीदवीया
दूकायूज्यामिनमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ आवाहनादिया
निमूदा ॥ ॥ सहदवयूजा ॥ आधम्र ॥ आशास
नस्थानमः ॥ क्रीं क्रीं मां सहदवाय रुमं कीं कि

सुहिगायनमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ आवाहनादिखप्रव
ममूदा ॥ ॥ नकूलयूजा ॥ आधम्र ॥ आशासनः
स्थानमः ॥ क्रीं क्रीं मां नकूलाय नवनीं कि सुहि
गायनमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ आवाहनादि कून्म
दा ॥ ॥ अरून्मयूजा ॥ आधम्र ॥ आशासनस्था

नमः॥ क्रीं ह्रीं श्रीं मूर्तिनाय सूरदास कि सदिनाय
नमः॥ ३॥ व वृ लि॥ आ वा रु ना दि ध नू वृ लि मूः
दां॥ ॥ य धि धि न य ज्ञा॥ आ धा व ग स्मा या स न खा
नमः॥ क्रीं ह्रीं श्रीं य धि धि ना य दा य दी ग कि सदि
नाय नमः॥ ३॥ व वृ लि॥ आ वा रु ना दि य सू क

मूः दा॥ ॥ ध न ध न का व स ल स ग या ङ्ग लि॥ उं
क्रीं श्रीं गी दा य दी द वी नमः॥ ३॥ व लि॥ विं ज झं
झं मूः नि खा स च्छ न्द म हा रू न वा य या
द कां पू ज या मि नमः॥ ३॥ व लि॥ ॥
उं वृ ह्रीं क्रीं ही मा य खा हा णी ही म ही मा खान

म४॥३॥ वलि॥ यउङ्ग॥ आवाहनादि गदाया
निमडां दधैयत् ॥ ॥ वृय॥ दिशु गन्धसमाः
यूकमिह्यादि॥ ॥ दीय॥ सूयकाऽममहादीय
ह्यादि॥ ॥ नेवय॥ अर्नमहात्रसं दिशु मिह्या
दि॥ ॥ रुसपूष्यनामूल धूयदीयने वयः

दिसंकल्पसिद्धिप्रसूदने वयं नमः॥ ॥
ऊय॥ कौं स्वाहा१०॥ वां स्वाहा१०॥ यौं स्वाहा१०॥ गं
स्वाहा१०॥ म्रौं स्वाहा१०॥ न्रौं स्वाहा१०॥ ज्रौं स्वाहा१०
॥ य्रौं स्वाहा१०॥ म्र्यौं स्वाहा१०॥ उं वृं नं श्रीं
वृं कौं रीं सा यसां वृं हा ५४॥ ऊयं समं व्ययं॥

गुणं मानखलुनी नवनागसदुग्राधं वाङ्मवी
थनिसासुत ॥ अत्र वासिनं वव वदकाः
नविष्णुन ॥ रुयाग्निह न्यतयन नमोमि
थात्र नूयिनं ॥ नकवीरुसहादेय कीचकानवि
मर्दनी विनाठ नग नयूव गं नोमिहीमनूयिः

नं ॥ वकासूत्रनिह नानं जेला अषसूयुजिनं
यककिन्ननगन्धव यूजिनं नं नसास्यहं ॥ दूया
धनसूह रुय किन्वीव अविनाशनं ॥ संग्राम
हन्यनयन नन्नमामिमहध्वनं ॥ अथोत्र नू
यिष्णुव वहीमस्यव महात्मन ॥ यय ० निः

नवाः स्मार्तं न वां रुद्रं रुद्रविश्रुति ॥ न स सुहृत्
स वा शाय दृष्ट कीचकमात्रिणः । यथिसंज्ञः
सदाशुचः उरुना गिनिस्त्रासिनः ॥ नृनिहीन
स न स्मार्तं समायुक्तं ॥ यश्च वा एष दाता एष
कवचं रुद्र उवाच ॥ न ददय विद्याता न

शान्तिरुवाच ॥ अग्नयन्त्रिदि ॥ ॥ एतः
यच्चाय ॥ ॥ नर्येण ॥ यीतः यथासनस्मृति ॥
स्वानकाकाय ॥ एकानकरुवन्ति ॥ अन्विपूर्व ॥
स्वानयदानुवांश्चायता विद्यमालकास्त ॥
दव विस्मृतेन यादवकाय ॥

बलाद्याय ॥ यागायाय ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ शुक्रा
सप्तम ८३२ वेगायवदि १२ गीगीजय रुयमीन्द
सप्तदं वसन गीगी साह वश्याव दान वन क
मादय क सविश्या दान शला ॥ शुक्रसमु ॥

